International Journal of Scientific Research in Science and Technology
© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

# भारतीय सभ्यता में वनस्पति और बाणभट्ट

**दीनानाथ मिश्र**
**शोधछात्र – स्नातकोत्तर संस्कृत विभाग**
**ललितनारायण मिथिला विश्वविद्यालय,**
**जिला – दरभंगा (बिहार), भारत**

**सारांश** – जीवमात्र के संरक्षण एवं संवर्धन में वनस्पति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। वनस्पति एवं वृक्षों का मानव सभ्यता के विकास में महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय सभ्यता और संस्कृति ही नहीं, अपितु विश्व की सभ्यता और संस्कृति में वनस्पति का स्थान प्रमुख है। कवियों ने काव्यों में वृक्ष आदि का प्रचुर काव्यात्मक वर्णन किया है। बाणभट्ट के काव्यों में प्रकृति का बाह्य एवं आन्तरिक चित्रण प्रचुरता से किया है। बाणभट्ट की कृतियों में प्रकृतिचित्रण अलङ्कृत एवं क्लिष्ट होने के बाद भी रमणीय है।

**प्रमुख शब्द**– वृक्ष, वनस्पति, बाणभट्ट, कादम्बरी, प्रकृति, संस्कृति, वाल्मीकि, अनिर्वचनीय, उद्दीपन।

---

भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति में वनस्पति का महत्त्वपूर्ण स्थान है। महर्षि मनु के अनुसार वनस्पति का महत्व एवं वर्गीकरण इस प्रकार किया जा सकता है।

**अपुष्पाः फलवन्तो ये ते वनस्पतयः स्मृताः।**
**पुष्पिणः फलिनश्चैव वृक्षास्तूभयतः स्मृताः।।**[1]

बिना फूल लगे फलने वाले यथा–बड़, गूलर, पाकर, पीपल आदि को 'वनस्पति' और फूल लगने के बाद फलने वाले यथा–आम, जामुन, अमरूद, आँवला आदि को 'वृक्ष' कहते हैं।

**गुच्छगुल्मं तु विविधं तथैव तृणजातयः ।**
**बीजकाण्डरुहाण्येव प्रताना वल्ल्य एव च।।**[2]

'गुच्छ' जड़ से लता समूह वाले, यथा मल्लिका आदि, 'गुल्म' एक जड़ से अनेक होने वाले, यथा ईख, सरपत्ता, कास आदि, 'तृण' घास यथा–उलप आदि, 'प्रतान' सूत के समान रेशे वाले यथा–करेला, कहू, काशीफल आदि, और बल्ली भूमि से वृक्षादि के सहारे चलने वाले यथा–गुडूची आदि से सब बीज तथा शाखा से लगते हैं।

यद्यपि बाणभट्ट ने कादम्बरी की रचना नगर–वर्णनों से ही प्रारम्भ की है तथापि कादम्बरी में प्रकृति का उदात्त चित्रण पर्याप्त मात्रा में उन्मुक्त वातावरण में विकसित दिखाई देता है। बाणभट्ट के प्रकृति–चित्रण में मुख्य रूप सहृदय हृदय को मुग्ध करते हैं– प्रकृति का आन्तर चित्र और दूसरा बाह्य चित्र।

बाणभट्ट की यह विशेषता है कि वे अन्तःप्रकृति के सूक्ष्म निरूपण–शक्ति का परिचय देते हुए बाह्य प्रकृति का रमणीय चित्र प्रस्तुत करने में सिद्धहस्त कुशल शिल्पी थे। राजप्रासादों एवं समृद्धि का विस्तृत वर्णन करते हुए प्रकृति के रमणीय प्रांगण में पहुंच जाते हैं। इनकी प्रकृति–चित्रण की छटा सर्वत्र अलंकृत होने के कारण अतीव रमणीय फुलवारी की भाँति मनोहारी होती है। इनका प्रकृति–वर्णन सजीव चेतन जैसा व्यवहार करने लगता है।

बाणभट्ट ने अपने पूर्ववर्ती कवियों वाल्मीकि, व्यास, कालिदास आदि के समान प्रकृति को आलम्बन रूप में चित्रित किया है और कहीं भी औचित्य का उल्लंघन नहीं किया है। फिर भी बाणभट्ट के प्रकृति–चित्रणों में समीक्षकों को स्वाभाविकता की न्यूनता दीख पड़ती है। इसका कारण है बाणभट्ट का अलङ्कारप्रिय होना। उनकी अपनी अलंकृत शैली है, अतः हर वस्तु को अलंकृत रूप में ही वे

प्रस्तुत करना चाहते हैं। यदि वाल्मीकि, व्यास, कालिदास आदि के प्रकृति-चित्रण वन में स्वयं उत्पन्न लताओं के रमणीय कुञ्ज हैं तो बाणभट्ट के प्रकृति चित्र उपवन में माली द्वारा सिंचित एवं सुरुचिपूर्ण काट-छाँट कर पुष्पों के गुच्छों से अलंकृत लताकुञ्ज हैं। इसमें बाण की अद्‌भुत प्रतिभा से रमणीय अलंकृत शैली में उकेरे गये प्रकृति-चित्र अस्वाभाविक होते हुए भी स्वाभाविक रमणीयता का ह्रास न कर दोगुनी श्रीवृद्धि ही करते हैं। ऐसी मनोहारी रमणीय चारुता अन्यत्र दुर्लभ है।

बाणभट्ट ने प्रकृति के मनोरम चित्रों के साथ-साथ भयावह चित्र भी उतनी ही सजीवता व चारुता के साथ चित्रित किया है। सच्चा कवि वही होता है जो शोभन के साथ ही उसके अशोभन, कोमल के साथ कठोर-दोनों ही रूपों को एक सी तन्मयता के साथ बिना पक्षपात के ग्रहण करे। केवल रमणीय अथवा कोमल चित्र प्रस्तुत करने वाला कवि प्रकृति के प्रति पक्षपाती, विलासिताप्रिय कवि माना जाता है। अत: बाणभट्ट ने प्रकृति के सुन्दर और असुन्दर, कोमल और कठोर दोनों रुपों को चित्रित करके अपना स्वाभाविक प्रकृति-प्रेम अभिव्यक्त किया है। इसके उदाहरण विन्ध्याटवी के भयावह एवं कठोर वर्णन तथा जाबालि आश्रम एवं अच्छोद सरोवर के पवित्र एवं रमणीय वर्णन हैं। बाणभट्ट के प्रकृति-चित्रण उपमा, उत्प्रेक्षा, विरोधाभास, परिसंख्या आदि अलंकारों की प्रचुरता से सजे हुए हैं। पूर्णोपमा अलङ्कार के माध्यम से चित्रित विन्ध्याटवी का यह वर्णन पाठकों के चित्त की बरबस ही अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है-

**'क्वचित् प्रलयवेलेव महावराहद्रंष्टासमुत्खातधरणिमण्डला, क्वचिद्दशमुखनगरीय चटुलवानरवृन्दभुज्यमानतुङशाखाकुला, क्वचिदचिरनिर्वृत्तविवाहभूमिरिव हरित्कुशस मित्कुसुमपलाशशोभिता, क्वचिदुन्मतमृगपतिनादभीतेव कण्टकिता।[3]**

प्रस्तुत गद्यांश में द्वयर्थक शब्दों की योजना करके पूर्णोपमा का सजीव चित्र प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि ऐसे स्थलों पर वैचित्र्य की अनुभूति अवश्य होती है तथापि इनसे पाठकों की बुद्धि की तृप्ति होती है, हृदय की नहीं। वास्तव में बाणभट्ट शाब्दी क्रीडा और अलङ्कार योजना में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि वे भावपक्ष की उपेक्षा भी कर जाते हैं। श्लिष्ट उपमानों की झड़ी लगाते चले जाते हैं जिससे सामान्य पाठक के साथ ही व्युत्पन्न पाठक की भी कभी-कभी बुद्धि को व्यायाम करना पड़ता है। डॉ॰ भोलाशंकर व्यास ने बाण के प्रकृति चित्रण के विषय में अपना मत इस प्रकार व्यक्त किया है- 'पर सुबन्धु की तरह बाण इन कलाबाजियों में सदा नहीं फँसते और पहले वे वर्ण्य-विषय को पूरी ईमानदारी से वर्णित कर देते हैं तब श्लेष की जटिल पंक्ति का आश्रय लेते हैं।'

उदाहरणार्थ सरोवर का वर्णन पहले पूर्ण रमणीयता के साथ किया है, तदनन्तर श्लेष-अनुप्राणित उपमानों का प्रचूर प्रयोग किया है-

**'यौवनमिवोत्कलिकाबहुलम्, उत्कण्ठितमिव मृणालवलयालङकृतम्, महापुरुषमिव मीनमकरकूर्मचक्रप्रकटलक्षणम्, षण्मुखचरितमिव श्रूयमाणक्रौञ्चवनिताप्रलापम्।[4]**

इसके अतिरिक्त प्रात: काल, सन्ध्याकाल, सूर्योदय, चन्द्रोदय वनस्पतियों आदि प्रकृति के रमणीय चित्रों का भी चित्रण किया है। निम्न पंक्तियों में प्रात:काल की छटा मनोहारी है-

**'एकदा तु प्रभातसन्ध्यारागलोहिते गगनतले, कमलिनी मधुरक्तपक्षपुटे, वृद्धहंस इव मन्दाकिनीपुलिनादपरजलनिधितटमवतरति चन्द्रमसि, परिणतरङारोमपाण्डुनि, व्रजति विशालामाशाचक्रावाले सन्ध्यामुपासितुमुत्तराशावलम्बिनि मानससरस्वतीतीर-मिवातरति सप्तर्षिमण्डले।[5]**

इसी प्रकार चन्द्रोदय के अनन्तर छिटकी हुई चन्द्रिका की रमणीय शोभा का वर्णन भी अवलोकनीय है-

**'गङसागरानापूरयन्ती हंसधवला धरण्यामापतज्ज्योत्स्ना हिमकरसरसि विकचपुण्डरीकसिते, चन्द्रिकाजलपानलोभादवती निश्चलमतिरमृतपङोंलग्न इवादृश्यत हरिण:।[6]**

इस प्रकार बाणभट्ट ने अनेक मनोहर कल्पनाओं को प्रकृति चित्रण में अलंकृत शैली द्वारा आकार देकर एक विशेष प्रकार का चमत्कार उत्पन्न किया है। फिर भी यह सत्य है कि बाणभट्ट ने प्राय: अपनी रुचि एवं स्वभाव के अनुकूल अथवा तत्कालीन काव्यजगत् की मान्यता के अनुसार लम्बे-लम्बे समासों का प्रयोग प्रकृति-चित्रण जैसे सुकुमार क्षेत्र में किया है। श्लिष्ट वर्णनों के प्रसंग में लघुकाय वाक्य अवश्य दिखाई देते हैं, परन्तु कहीं श्लिष्ट चित्र खण्डित न हो जाये, सम्भवत: इसी आशय से विशेषणों के रूप में एक विस्तृत

वाक्य की रचना करके चित्र को एक सूत्र में बाँधने का प्रयत्न किया है। ऐसे चित्रणों में विन्ध्याटवी वर्णन, जाबालि आश्रम, सिद्धायतन, उज्जयिनी, तारापीड, इन्द्रायुध, राजभवन, अच्छोदसरोवर, प्रभात, सन्ध्याकार महाश्वेता, कादम्बरी आदि के वर्णन प्रमुख है।

बाण की रचनाओं में उत्प्रेक्षा का सशक्त चमत्कार उनके काव्य-सौन्दर्य को द्वगुणित कर देता है। कवि की विचित्र कल्पना प्रात:कालीन प्रकाश स्वाभाविक प्रसार को दिशाओं के स्वाभाविक प्रसार कल्पना में परिणत कर देती हैं जिससे काव्य-सौन्दर्य में नि:सन्देह अभिवृद्धि होती है। सन्ध्याकाल का एक ऐसा ही उत्प्रेक्षामय चित्र अवलोकनीय है-

**'क्वापि विहत्य दिवसावसाने लोहिततारका तपोवनधेनुरिव कपिला परिवर्त्तमाना सन्ध्या तपोधनैरदुश्यत। अचिरप्रोषिते सवितरि शोकविधुरा कमल-मुकुलकमण्डलुधारिणी हंससितदुकूलपरिधाना मृणालवलययज्ञोपवितिनी मधुमण्डलाक्षवलयमुद्वहन्ती कमलिनी दिनपतिसमागमव्रतमिवाचरत्।[7]"**

प्रस्तुत गद्यांश में संध्या के मनोरम चित्र के साथ ही इसमें वर्णित अप्रस्तुत वर्णन भी आश्रम के जीवन और उसके वातावरण के लिए बहुत उपयुक्त बन गये हैं। डॉ. भोलाशंकर व्यास ने इस गद्यांश में नाटकीय पताकास्थानक या ड्रामेटिक आइरनी होने की सम्भावना प्रकट की है। इसके द्वारा बाणभट्ट ने महाश्वेता के भविष्य की घटना का संकेत किया है।

बाणभट्ट का यह विस्तृत वर्णन कथा में व्याघात अवश्य उत्पन्न करता है परन्तु बाण के प्रकृति-चित्रण पाठकों के लिए उत्प्रेक्षा, श्लेष, उपमा और विरोधाभास आदि अलंकारों के द्वारा एक नवीन आकर्षण भी उपस्थित करते है। इस कारण पाठक एक अनिर्वचनीय रमणीयता के आस्वाद में मग्न हो कथा में होने वाले व्याघात का अनुभव ही नहीं कर पाते। बाण ने पात्रों की मानसिक दशा के अनुरूप और कक्षा के वातावरण के अनुकूल प्रकृति के चित्रों का सूक्ष्म चित्रण किया है। महर्षि जाबालि के आश्रम में निकलने वाले चन्द्र की तथा पुण्डरीक के प्रेम में व्याकुल महाश्वेता के विरह के वातावरण में चन्द्रोदय वर्णन उद्दीपन का काम करता है। पुण्डरीक के प्रेम में व्याकुल महाश्वेता चन्द्रोदय को देखकर और अधिक व्याकुलता का अनुभव करती है। चन्द्रापीड और कादम्बरी के प्रेम को दृढ़ बनाने में बाणभट्ट ने प्रकृति के सन्ध्या वर्णन और चन्द्रोदय वर्णन को आलम्बन रूप में ग्रहण किया है। इस प्रकार बाणभट्ट ने प्रकृति के आलम्बन व उद्दीपन दोनों रूपों का सफलतापूर्वक चित्रण किया है।

इस प्रकार भारतीय सभ्यता में वनस्पति का स्थान साहित्य एवं समाज को उत्कृष्ता प्रदान करने में प्रमुख है, जिसे बाणभट्ट ने अपने काव्य में दर्शाया है।

## सन्दर्भ सूची


1. मनुस्मृति:-1/471
2. मनुस्मृति:-1/48
3. कादम्बरी परिशीलन, पृष्ठ-84
4. कादम्बरी परिशीलन, पृष्ठ-84
5. कादम्बरी परिशीलन, पृष्ठ-85
6. कादम्बरी परिशीलन, पृष्ठ-85
7. वही, पृष्ठ-16